शोध मंथन ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X Impact Factor 6.726 (SJIF)
Vol. X, No.IV, pp (1077-1082) Oct.- Dec. 2019

कुशीनगर जनपद (उ0प्र0) में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप

प्रभात कुमार तिवारी
शोध छात्र, भूगोल विभाग,
दी.द.उ.गो.वि.वि.गोरखपुर।
Email: prabhatramawati2008@gmail.com

सारांश

भूगोल में मानव एवं उसकी संख्या केन्द्रीय तत्व है। यह एक भौगोलिक तत्व संसाधन तथा कारक है। यह प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग करता है और मानवीय वातावरण का सृजन करता है। अतः मानव की संख्या एवं उसकी प्रकृति एक महत्वपूर्ण अध्येय विषय हैं एक ओर मानव जहाँ विभिन्न प्राकृतिक तत्वों या तत्व समुच्य की संसाधनता में वृद्धि करके अपने विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। वहीं दूसरी ओर उसकी प्रकृति भी स्वयं उसके विकास में बाधक सिद्ध हो जाती है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, साधन घनत्व, निरक्षरता, सामाजिक एवं धार्मिक रूढियां तथा अंधविश्वास, विषम लिगांनुपात आदि इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। किसी प्रदेश की जनांकिकीय विशेषतायें उस प्रदेश के भौतिक पर्यावरण के तत्वों तथा संसाधनों का संयुक्त परिणाम होती है। जनांकिकीय वैशिष्ट्य पर ही संसाधनों का वर्तमान उपयोग, संरक्षण एवं समुचित नियोजन आधारित होता है।

प्रस्तावना

भूगोल में मानव एवं उसकी संख्या केन्द्रीय तत्व है। यह एक भौगोलिक तत्व संसाधन तथा कारक है। यह प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग करता है और मानवीय वातावरण का सृजन करता है। अतः मानव की संख्या एवं उसकी प्रकृति एक महत्वपूर्ण अध्येय विषय हैं एक ओर मानव जहाँ विभिन्न प्राकृतिक तत्वों या तत्व समुच्य की संसाधनता में वृद्धि करके अपने विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। वही दूसरी ओर उसकी प्रकृति भी स्वयं उसके विकास में बाधक सिद्ध हो जाती है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, साधन घनत्व, निरक्षरता, सामाजिक एवं धार्मिक रूढियां तथा अंधविश्वास, विषम लिगांनुपात आदि इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। किसी प्रदेश की जनांकिकीय विशेषतायें उस प्रदेश के भौतिक पर्यावरण के तत्वों तथा संसाधनों का संयुक्त परिणाम होती है। जनांकिकीय वैशिष्ट्य पर ही संसाधनों का वर्तमान उपयोग, संरक्षण एवं समुचित नियोजन आधारित होता है।

विश्व के अनेक विकासशील देशों में मानव व खाद्य पदार्थ के मध्य बढ़ती दूरी, आने वाले समय में एक ऐसा साम्राज्य स्थापित कर देगी, जिसमें भूख, रूग्णता, वस्त्रहीनता अर्थात् आवश्यक तत्वों के अभाव का प्रशासन होगा। इस संदर्भ में जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक

और प्रासंगिक है। जनसंख्या भूगोल का चरम–लक्ष्य मानव कल्याण हेतु एक ऐसा आधार प्रस्तुत करना होता है, जो समय और स्थान के परिप्रेक्ष्य में मानव संख्या और संसाधनों का संतुलन वर्तमान और भविष्य के लिए प्रस्तुत कर सके ।

अध्ययन क्षेत्र

कुशीनगर जनपद उत्तर प्रदेश के धुर पूर्वोत्तर में बिहार से संलग्न 26^0 $34^/$ उत्तर से 27^0 $17^/$ उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 $32^/$ पूर्व से 84^0 $15^/$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।। इस जनपद (अध्ययन क्षेत्र) की पूर्वी सीमा बिहार राज्य, दक्षिणी सीमा देवरिया जनपद, द0प0 सीमा गोरखपुर जनपद एवं उ0 प0 सीमा महराजगंज जनपद की सीमाओं से निर्धारित होती है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2873.5 वर्ग कि0मी0 है। इसकी आकृति त्रिभुजाकार है। अध्ययन क्षेत्र देवरिया जनपद का अंग था, परन्तु 13 मई 1994 को देवरिया जनपद के उत्तरी भाग को अलग करके पडरौना नाम से एक नया जनपद सृजित किया गया। 19 जून 1997 इसका नाम बदल कर कुशीनगर रखा गया। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि कुशीनगर ख्याति प्राप्त पर्यटक स्थल एवं बौद्ध धर्म का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कुशीनगर जनपद भारत ही नहीं बल्कि विश्व में प्रसिद्ध है। शान्ति एवं अहिंसा के पुजारी भगवान बुद्ध एवं महावीर स्वामी की परिनिर्वाण स्थली क्रमशः कुशीनगर एवं पावानगर इसी जनपद में है। जनपद का मुख्यालय (रविन्द्र नगर) कुशीनगर से 18 किमी0 दूर उत्तर दिशा में है। यहाँ से 2 किमी0 पूर्व 'कसया' नगरीय केन्द्र है। कुशीनगर में देश–विदेश की की सहायता से निर्मित मन्दिर एवं बौद्ध मठ तथा बौद्धकालीन अवशेष हैं। प्राचीन बौद्ध साहित्य में इसे कुशीनारा के नाम से सम्बोधित किया गया है। ऐसी वन्दती है कि महाराज रामचन्द्र के पुत्र कुश ने इसकी स्थापना त्रेता युग में की थी तथा इसे अपनी राजधानी बनाकर इस भू–भाग पर वर्षो तक शासन किया था। इस प्रकार यह शताब्दियों तक कोशल राज्य के अधीन एक समृद्धशाली राज्य था। आगे चलकर ईक्ष्वाकु वंश के क्षत्रिय राजाओं की एक शाखा मल्ल वंश के नाम से विख्यात हुई। इसने इस प्रदेश पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और मल्ल वंश के नाम से यहाँ शासन प्रारम्भ किया। इनकी एक अन्य शाखा ने पावा में भी अपना राज्य स्थापित किया। महाभारत काल में कुशीनारा तथा पावा के मल्लों का उल्लेख मिलता है। उस समय ये दोनों राज्य मल्ल राष्ट्र के नाम से विख्यात थे। ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में ये दोनों राज्य पूर्ण गणतन्त्र के रूप में विकसित हो चुके थे। कुशीनगर नाम 1934 ई0 में प्रचार में आया है। इसी वर्ष यहाँ बुद्ध विद्यालय की स्थापना भी की गई। इस जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2906 वर्ग किमी० तथा घनत्व 1226 व्यक्ति वर्ग किमी० है। कुशीनगर जनपद की कुल जनसंख्या 3564970 है। जिसमें 51.00 प्रतिशत पुरूष तथा 49 प्रतिशत महिला जनसंख्या है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान भौतिक एवं मानवीय दशाओं का अध्ययन करते हुए जनसंख्या वितरण प्रतिरुप का विश्लेषण करना है। साथ ही उन कारकों को भी रेखांकित करना है जो जनसंख्या वितरण की असमानता को प्रभावित करते हैं।

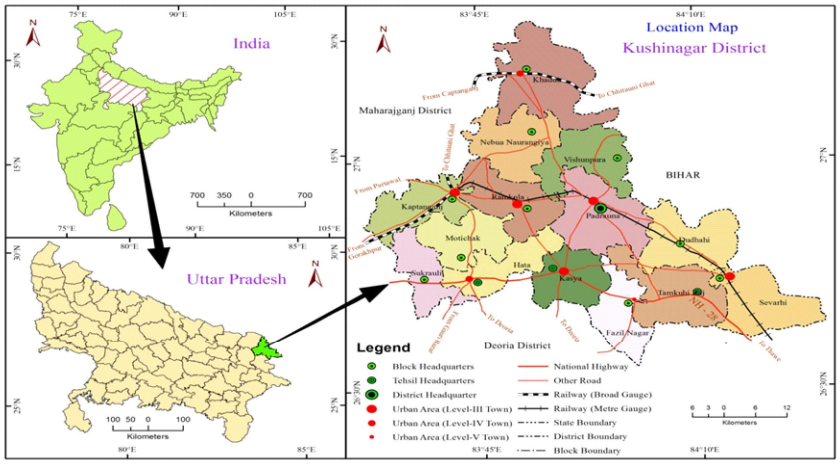

आँकड़ो का स्रोत एवं विधितंत्र : प्रस्तुतअध्ययन क्षेत्र में ऑकड़ों एवं सूचनाओं के संग्रह हेतु द्वितीयक आँकड़ो का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या सम्बन्धित आँकड़ो के लिए कुशीनगर की जनगणना 2001 एवं 2011 के प्रकाशित स्रोतों जनगणना पुस्तिका, जनपद गजेटियर, जनपद सांख्यिकी पत्रिका से जनसंख्या की विभिन्न विशेषताओं से सम्बन्धित आँकड़े लिये गये हैं। प्रस्तुत अध्यन में क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताओं को कालिक परिवर्तनों एवं क्षेत्रीय स्वरूपों में स्पष्ट करने के लिए क्रमबद्ध उपागम को अपनाया जायेगा।

तालिका– 1

कुशीनगर जनपद : जनसंख्या वितरण प्रतिरुप 2011

विकास खण्ड	क्षेत्रफल(वर्ग किमी. में)	कुल जनसंख्या	घनत्व प्रति वर्ग किमी.
कप्तानगंज	179.37	204569	1140
रामकोला	234.02	239918	1025
मोतीचक	173.07	195065	1127
सुकरौली	158.33	189203	1195
हाटा	158.21	202959	1283
खड्डा	307.39	246445	802
नेबुआ नौर0	198.34	223759	1128
विशुनपुरा	217.85	252760	1160
पडरौना	278.51	387092	1390

 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

कसया	146.3	185667	1269
दुदही	240.69	297203	1235
फाजिलनगर	166.09	215203	1296
तमकुही	209.61	271649	1296
सेवरही		232.29 284945	1227

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद कुशीनगर।

जनसंख्या घनत्व का स्थानिक वितरण प्रतिरुप : प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या को आधार बनाकर विकास खण्डवार जनसंख्या घनत्व की गणना की गयी है। सामान्यतः जनसंख्या के वितरण को जनसंख्या घनत्व के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य प्रति इकाई क्षेत्रफल में निवास करने वाली जनसंख्या से है। तालिका 1 से स्पष्ट है कि 2011 में कुशीनगर जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व का औसत वितरण 1226 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी० है जिसमें सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पड़रौना विकास खण्ड में 1390 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी० तथा न्यूनतम जनसंख्या घनत्व खड्डा विकास खण्ड में 802 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी० है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में विकास खण्डवार जनसंख्या के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनसंख्या घनत्व के क्षेत्रीय वितरण में यहाँ असमानता मिलती है जिसे तालिका 2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका– 2

संवर्ग	संकेतक (व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी०)	विकास खण्डों की संख्या	विकास खण्डों के नाम
अति उच्च	>1250	5	हाटा, कसया, पड़रौना, फाजिलनगर, तमकुही
उच्च	1100–1150	2	दुदही, सेवरही
मध्यम	1050–1100	2	सुकरौली, विशुनपुरा
निम्न	<1050	5	कप्तानगंज, रामकोला, मोतीचक, खड्डा, नेबुआनौरंगिया

स्रोत– शोध छात्र द्वारा परिगणित

अध्ययन क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व की क्षेत्रीय विषमता का अध्ययन चार वर्गो में किया गया है जिसका विवरण निम्नवत है–

अति उच्च संवर्ग (1250 से अधिक)

इस संवर्ग के अन्तर्गत पाँच विकासखण्ड हाटा, कसया, पडरौना, फाजिलनगर तथा सेवरही सम्मिलित हैं। इन विकासखण्डों में जनसंख्या घनत्व अधिक होने का प्रमुख कारण परिवहन, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं की अधिकता है।

उच्च संवर्ग (1100 से 1150)

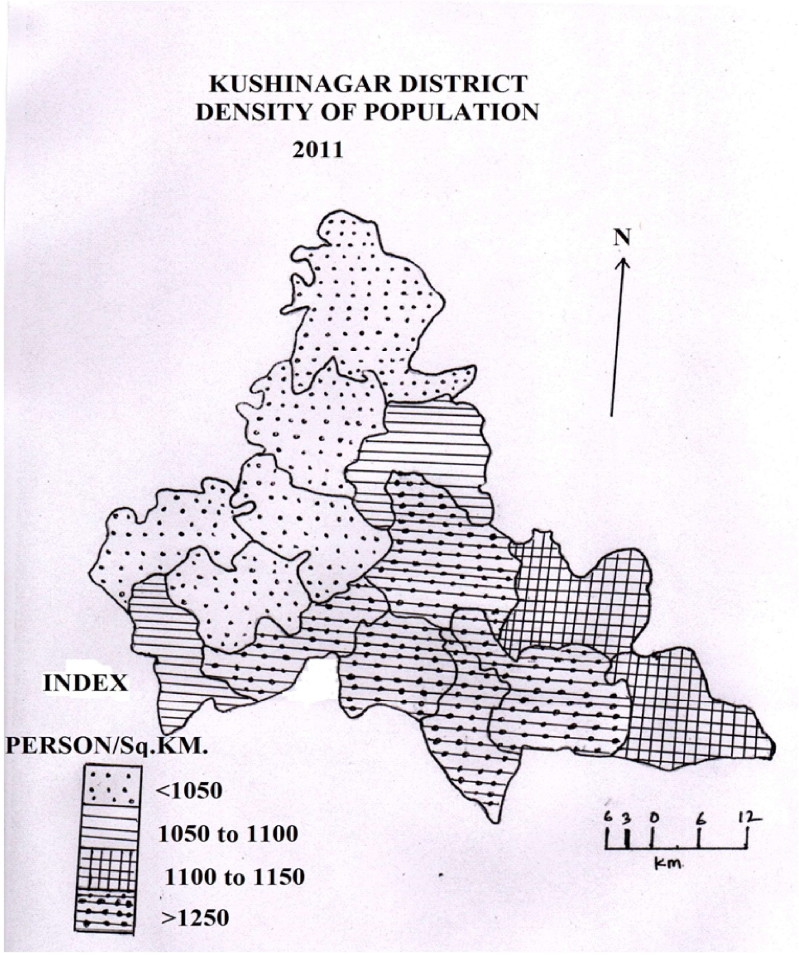

इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद के पूर्वी भाग में स्थित दुदही एवं सेवरही विकास खण्ड सम्मिलित हैं। इन विकासखण्डों में जनसंख्या घनत्व उच्च होने का प्रमुख कारण छोटी–छोटी औद्योगिक इकाईयों की स्थापना, रेलवे यातायात की सुविधा एवं कृषि कार्यो की सुलभता है।

 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

मध्यम संवर्ग (1050–1100)

इस संवर्ग के अन्तर्गत पश्चिमी विकासखण्ड सुकरौली तथा उत्तरी पूर्वी विकास खण्ड विशुनपुरा सम्मिलित है। इन विकास खण्डों में जनसंख्या घनत्व कम होने का प्रमुख कारण नगरीय क्षेत्र में लोगों का पलायन है।

निम्न संवर्ग (1100 से कम)

इस संवर्ग के अन्तर्गत कुल पाँच विकासखण्ड कप्तानगंज, रामकोला, मोतीचक, खड्डा तथा नेबुआ नौरंगिया सम्मिलित है। इन विकास खण्डो में जनसंख्या घनत्व कम होने का प्रमुख कारण चिकित्सा, स्वास्थ्य, परिवहन एवं शिक्षा की उचित व्यवस्था न होना है। इसके अतिरिक्त रोजगार की तलाश में लोगो का गाँवो से शहरों में पलायन भी प्रमुख कारण है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वितरण में अत्यधिक असमानता विद्यमान है। जिन भागों में कृषि योग्य भूमि, शैक्षणिक संस्थान, स्वास्थ्य सुविधायें, रेल एवं सड़क मार्ग का विकास हुआ है वहाँ जनसंख्या धनत्व अधिक है, किन्तु जिन भागों में सुख सुविधाओं का विकास नहीं हुआ है वहाँ कम जनसंख्या धनत्व है। स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या धानत्व राष्ट्रीय औसत (382) एवं प्रादेशिक औसत (859) से काफी अधिक है। अतः जनसंख्या के गुणात्मक विकास हेतु रोजगार परक क्रियाकलापों का विकास, चिकित्सा, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की उचित व्यवस्था संविकास की दृष्टि से वांछनीय है।

संदर्भ ग्रंथ

1 श्रीवास्तव अशोक कुमार (2006)– *उत्तर प्रदेश तराई क्षेत्र में जनसंख्या गत्यात्मकता एवं संविकास,* शोध–पत्र गोरखपुर विश्वविद्यालय

2 सिंह, के0एन0 (2001)– *जनसंख्या वृद्धि की चुनौतियां, संविकास संदेश,* ग्रामीण संविकास संस्थान, गोरखपुर

3 *जनसंख्या एवं प्रादेशिक विकास,* राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।

4 सिंह देवेन्द्र नाथ (1984)– *सरयूपार मैदान में जनसंख्या की गत्यात्मकता,* शोध प्रबन्ध अप्रकाशित गो0वि0वि0, गोरखपुर।

5 श्रीवास्तव अशोक कुमार (2006)– उ*त्तर प्रदेश के तराई में जनसंख्या गत्यात्मकता एव संविकास,* शोध प्रबन्ध, अप्रकाशित दी0द0उ0गो0वि0वि0, गोरखपुर।

6 http//kushinagar.nic.in

7 *सामाजिक आर्थिक,* समीक्षा (2016) जनपद कुशीनगर।